4
भगवान के डाकिए

पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिए हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़
बाँचते हैं।

हम तो केवल यह आँकते हैं
कि एक देश की धरती
दूसरे देश को सुगंध भेजती है।
और वह सौरभ हवा में तैरते हुए
पक्षियों की पाँखों पर तिरता है।
और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

Rationalised-2023-24

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है? स्पष्ट कीजिए।
2. पक्षी और बादल द्वारा लाइ गई चिट्ठियों को कौन-कौन पढ़ पाते हैं? सोचकर लिखिए।
3. किन पंक्तियों का भाव है—

   (क) पक्षी और बादल प्रेम, सद्‌भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं।

   (ख) प्रकृति देश-देश में भेदभाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।
4. पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?
5. "एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है"—कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं?
2. आज विश्व में कहीं भी संवाद भेजने और पाने का एक बड़ा साधन इंटरनेट है। पक्षी और बादल की चिट्ठियों की तुलना इंटरनेट से करते हुए दस पंक्तियाँ लिखिए।
3. 'हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका' क्या है? इस विषय पर दस वाक्य लिखिए।

अनुमान और कल्पना

डाकिया, इंटरनेट के वर्ल्ड वाइड वेब (डब्ल्यू. डब्ल्यू. डब्ल्यू. WWW.) तथा पक्षी और बादल—इन तीनों संवादवाहकों के विषय में अपनी कल्पना से

© NCERT not to be republished

एक लेख तैयार कीजिए। लेख लिखने के लिए आप 'चिट्ठियों की अनूठी दुनिया' पाठ का सहयोग ले सकते हैं।

शब्दार्थ

बाँचना	–	पढ़ना, सस्वर पढ़ना
आँकना	–	अनुमान करना
पाँख	–	पंख, पर
सौरभ	–	सुगंध, सुबास

© NCERT not to be republished

केवल पढ़ने के लिए

कदम मिलाकर चलना होगा

बाधाएँ आती हैं, आएँ,
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ
पाँवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ
निज हाथों से हँसते-हँसते,
आग लगा कर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रुदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,

© NCERT not to be republished

Rationalised-2023-24

क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अमर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अथ,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल-सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न माँगते,
पावस बनकर ढलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

कुश काँटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुवन,
परहित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

—अटल बिहारी वाजपेयी

© NCERT not to be republished

भारत के दसवें प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर रियासत की शिंदे छावनी में हुआ था। उनके पिता पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी अध्यापक और माँ कृष्ण वाजपेयी गृहणी थीं। अटल बिहारी वाजपेयी वटेश्वर, आगरा, उत्तर प्रदेश के मूल निवासी थे। वे हिंदी कवि, पत्रकार व प्रखर वक्ता के रूप में लोकप्रिय हुए। अटल जी की कविताएँ कादम्बिनी, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नवनीत तथा राष्ट्र धर्म आदि सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। मंच से उनका काव्य पाठ उनके भाषण की तरह ही अत्यंत प्रभावशाली होता था। उन्होंने राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और वीर अर्जुन का कुशल सम्पादन किया

अटल बिहारी वाजपेयी तीन बार भारत के प्रधानमंत्री, एक बार विदेश मंत्री और 12 बार सासंद रहे। राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं के लिए उन्हें सर्वोच्च भारतीय नागरिक सम्मान '**भारत रत्न**' से भी विभूषित किया गया। 16 अगस्त 2018 को 93 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. इस कविता से आप अपने को जोड़कर कैसे देखते हैं?
2. आपकी दृष्टि में कदम मिलाकर चलने के लिए कवि क्यों प्रेरित करता है?
3. इस कविता की लयात्मकता पर चर्चा कीजिए।

© NCERT not to be republished